दैनिक भारत कि
तामीर

संपादक - काझी मकदूम शफीउद्दीन hinditameer@gmail.com
Editor in chief- Qazi makhdoom shafiuddin

बीड (महाराष्ट्र) | वर्ष-२ ला | अंक-९० वा | गुरूवार २९ जनवरी २०२६ | RNI TITLE CODE:MAHHIN11405/120/1/3/2024 | किमत : २ रूपये | पन्ने - ४

अजित पवार का आज अंतिम संस्कार, राज्य में तीन दिनों का राजकीय शोक घोषित

/ विशेष प्रतिनिधि
मुंबई, २८ जनवरी:

बारामती में हुए दुर्भाग्यपूर्ण विमान हादसे में दिवंगत हुए राज्य के उपमुख्यमंत्री अजित पवार के पार्थिव शरीर का गुरुवार को बारामती में पूरे राजकीय सम्मान के साथ अंतिम संस्कार किया जाएगा। उनके निधन के कारण राज्य में २८ से ३० जनवरी तक तीन दिनों का राजकीय शोक घोषित किया गया है।

इस अवधि के दौरान महाराष्ट्र की जिन इमारतों पर नियमित रूप से राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाता है, उन सभी स्थानों पर राष्ट्रीय ध्वज आधा झुका रहेगा। साथ ही, इस अवधि में किसी भी प्रकार के शासकीय मनोरंजन कार्यक्रम आयोजित नहीं किए जाएंगे-ऐसी जानकारी दी गई है।

दादा की असमय एक्ज़िट!

जमीर काजी
मुंबई (संवाददाता): आज का दिन महाराष्ट्र के लिए अत्यंत कठिन और शोकपूर्ण है। जमीन से जुड़े जननेता, मेरे मित्र और सहयोगी, उपमुख्यमंत्री अजितदादा पवार के विमान दुर्घटना में निधन की खबर ने मन को गहराई से व्यथित कर दिया है। यह घटना दिल को झकझोर देने वाली है। मन सुन्न हो गया है, भावनाएं व्यक्त करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं- मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने ये शोकमग्न शब्द कहे।

विभिन्न नेताओं की प्रतिक्रियाएं

उन्होंने कहा, मैंने अपना एक दमदार और दिलदार मित्र खो दिया है। यह मेरे लिए व्यक्तिगत क्षति है, जो कभी पूरी नहीं हो सकती। आज का दिन महाराष्ट्र के लिए बेहद कठिन है। मैं दादाओं को भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। उनके पूरे परिवार और राष्ट्रवादी कांग्रेस परिवार के दुःख में हम सहभागी हैं। इस दुर्घटना में अन्य चार लोगों की भी मृत्यु हुई है; उनके परिवारों के दुःख में भी हम शामिल हैं।

अजित पवार के विमान हादसे में असमय निधन से गहरा दुःख हुआ है। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें और पवार परिवार, सहयोगियों तथा असंख्य समर्थकों को इस दुःख को सहन करने की शक्ति दें।

- आचार्य देवव्रत (राज्यपाल, महाराष्ट्र)

मेरे बड़े भाई के जाने जैसा अहसास

अजित दादा अनुभव और आयु में मुझसे बड़े थे। उनके निधन से मुझे अपने बड़े भाई के जाने का एहसास हो रहा है। आज महाराष्ट्र के लिए काला दिन है। एक दूरदर्शी, स्पष्टवक्ता और अत्यंत अध्ययनशील नेता हमने खो दिया है। महायुति सरकार में वे केवल मेरे सहयोगी नहीं, बल्कि अच्छे मित्र भी थे। समय का सर्वोत्तम प्रबंधन उनका विशेष गुण था। वित्त मंत्री के रूप में उन्हें सभी विभागों की गहरी जानकारी रहती थी, फिर भी उन्होंने कभी शिष्टाचार की मर्यादा नहीं तोड़ी।

- एकनाथ शिंदे (उपमुख्यमंत्री)

धडाडीदार, कर्तबगार और जनप्रिय नेतृत्व का नुकसान

स्पष्टवक्ता, प्रशासन पर मजबूत पकड़ और जनसमस्याओं की गहरी समझ रखने वाले अजित दादा के निधन से महाराष्ट्र ने एक धडाडीदार, कर्तबगार और लोकाभिमुख नेतृत्व खो दिया है। काम के मामले में वे स्पष्ट, समयनिष्ठ और निर्णयक्षम थे।

- हर्षवर्धन सपकाल (प्रदेशाध्यक्ष, कांग्रेस)

अनुशासित और कार्यतत्पर नेतृत्व का अंत

महाराष्ट्र ने एक मजबूत, अनुशासित, समयनिष्ठ और कार्यतत्पर नेतृत्व खो दिया है। प्रशासन पर उनकी जबरदस्त पकड़ और सर्वांगीण विकास का संकल्प उनकी पहचान था।

- रविंद्र चव्हाण (प्रदेशाध्यक्ष, भाजपा)

महाराष्ट्र का दिल दहला देने वाला दुःख

अजितदादा पवार का निधन अत्यंत दुःखद और आघात पहुंचाने वाला है। उनके जाने से महाराष्ट्र ने अपना लाडला और दमदार नेतृत्व खो दिया है।

- रामदास आठवले (केंद्रीय सामाजिक न्याय राज्य मंत्री)

हमने अपना परिवारप्रमुख खो दिया

आज का दिन राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी सहित पूरे महाराष्ट्र के लिए काला दिन है। उनके निधन से एक कुशल प्रशासक, स्पष्टवक्ता और ग्रामीण विकास को समर्पित नेतृत्व का नुकसान हुआ है।

- सुनील तटकरे (प्रदेशाध्यक्ष, राष्ट्रवादी कांग्रेस)

दादा हमारे परिवार के सहारा-स्तंभ थे

अजितदादा केवल मेरे नेता नहीं थे, बल्कि मेरे परिवार का संबल थे। कठिन समय में वे ढाल बनकर साथ खड़े रहे।

- नवाब मलिक (वरिष्ठ नेता, राष्ट्रवादी कांग्रेस)

हमारा आधार-स्तंभ छिन गया

यह घटना अत्यंत पीड़ादायक है। उनके साथ वर्षों तक काम किया और पारिवारिक संबंध भी थे। यह मेरी व्यक्तिगत क्षति है।

- प्रफुल्ल पटेल (राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष, राष्ट्रवादी कांग्रेस)

उम्दा, सदैव मुस्कुराते और जिंदादिल व्यक्तित्व

अजितदादा का अचानक जाना पूरे महाराष्ट्र के लिए झटका है। उनसे बिछड़ना व्यक्तिगत रूप से भी अत्यंत कठिन है।

- छगन भुजबल (खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री)

उत्तम प्रशासक और मजबूत नेतृत्व का अंत

उनके असमय निधन से राज्य की राजनीति में एक प्रभावशाली व्यक्तित्व खो गया है।

- गणेश नाईक (वन मंत्री)

दादाओं के जाने से मन को गहरा आघात

आप इस तरह विदा नहीं ले सकते थे। महाराष्ट्र ने एक डायनैमिक नेता खो दिया है।

- पंकजा मुंडे (पर्यावरण मंत्री)

महाराष्ट्र के विकास की आंधी थम गई

यह केवल एक परिवार या दल की नहीं, बल्कि ▶▶पान ४ पे

'यह केवल एक दुर्घटना है, इसमें राजनीति न लाएं': शरद पवार की अपील

मुंबई (संवाददाता):

अजित पवार का आकस्मिक निधन महाराष्ट्र के लिए एक बहुत बड़ा आघात है। कर्तृत्ववान और निर्णायक क्षमता से युक्त एक व्यक्तित्व से आज महाराष्ट्र वंचित हो गया है। यह केवल एक दुर्घटना थी, इसमें राजनीति न लाई जाए-ऐसी अपील देश के वरिष्ठ नेता और राष्ट्रवादी कांग्रेस के संस्थापक शरद पवार ने की है।

उपमुख्यमंत्री अजित पवार के विमान हादसे को लेकर देशभर के कुछ नेताओं ने संदेह व्यक्त करते हुए मामले की गहन न्यायिक जांच की मांग की है। इस विषय पर समाचार चैनलों पर भी तरह-तरह की चर्चाएं चल रही हैं। इसी पृष्ठभूमि में अजित पवार के चाचा और राजनीतिक गुरु शरद पवार ने बुधवार को सोशल मीडिया के माध्यम से अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की।

उन्होंने कहा कि, अजित पवार के जाने से जो नुकसान हुआ है, उसकी भरपाई संभव नहीं है। लेकिन हर बात हमारे हाथ में नहीं होती। मैं आज मीडिया के सामने आने वाला नहीं था, लेकिन कुछ माध्यमों में इस दुर्घटना के पीछे राजनीति होने की बात ▶▶पान ४ पे

बीड में हज २०२६ के लिए वैक्सीन कैंप

२, ३ और ४ फरवरी को जिला शासकीय अस्पताल में हज प्रशिक्षण के लिए पाँच सत्रों का आयोजन-जायरीनों को मिलेगा व्यावहारिक मार्गदर्शन

बीड, २७ जनवरी (संवाददाता):

मरकज़े ख़िदमात-ए-हुज्जाज, बीड की ओर से हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी हज २०२६ पर जाने वाले सभी भाग्यशाली पुरुष एवं महिला आज़मीन (हज कमेटी के माध्यम से जाने वाले) के लिए २, ३ और ४ फरवरी को वैक्सीन कैंप का आयोजन किया जा रहा है। यह कैंप जिला शासकीय अस्पताल, बीड में आयोजित होगा। आयोजकों ने सभी आज़मीन से इसका लाभ लेने की अपील की है।

पिछले पाँच वर्षों की परंपरा के अनुसार इस वर्ष भी हज प्रशिक्षण का आयोजन किया गया है। हज प्रशिक्षण के पहले सत्र का आयोजन ११ शाबान, यानी शनिवार ३१ जनवरी २०२६ को सुबह १० बजे से शाम तक, आमन लॉन, कौसर नगर, बारसी रोड, बीड में किया जाएगा।

यह सभी प्रशिक्षण सत्र पिछले २५ वर्षों की परंपरा के अनुसार हज कमेटी के धार्मिक मार्गदर्शकों हजरत मौलाना शेख अहमद साहब काशिफी, मौलाना अब्दुल कय्यूम आबिद साहब कासमी, मौलाना ▶▶पान ४ पे

गेवराई के वरिष्ठ पत्रकार काज़ी अमान को महाराष्ट्र पत्रकार संघ का 'मूकनायक पुरस्कार'

गेवराई (प्रतिनिधि):

गेवराई के वरिष्ठ पत्रकार तथा दैनिक दिव्य लोकप्रभा के उप-संपादक काज़ी अमान को महाराष्ट्र पत्रकार संघ का 'मूकनायक पुरस्कार' घोषित किया गया है। इस पुरस्कार की घोषणा संघ के राज्य अध्यक्ष विलासराव कोळेकर और जिला अध्यक्ष बापूसाहेब हुंबरे ने की। इससे पूर्व भी काज़ी अमान को दर्पण पुरस्कार सहित अनेक सम्मान प्राप्त हो चुके हैं। इस पुरस्कार की घोषणा के बाद विभिन्न स्तरों से उनका अभिनंदन किया जा रहा है।

काज़ी अमान पिछले चालीस वर्षों से पत्रकारिता में सक्रिय हैं। शालांत प्रमाणपत्र परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद वर्ष १९८३-८४ में उन्होंने दैनिक झुंजार नेता से अपनी पत्रकारिता की शुरुआत की। उन्होंने मराठवाड़ा के पहले मराठी दैनिक अजिंठा, दैनिक लोकमत (मराठी), लोकमत समाचार (हिंदी), दैनिक महानगर (मराठी), दैनिक भास्कर (हिंदी) जैसे प्रतिष्ठित समाचार पत्रों में कार्य किया है। पिछले पाँच वर्षों से वे दैनिक दिव्य लोकप्रभा में उप-संपादक के रूप में कार्यरत हैं।

इसके अलावा, वे मराठवाड़ा के पहले उर्दू दैनिक औरंगाबाद टाइम्स के गेवराई तालुका प्रतिनिधि तथा दैनिक तामीर (उर्दू व हिंदी) के विशेष प्रतिनिधि के रूप में भी अपनी जिम्मेदारियाँ निभा रहे हैं। वे अखिल भारतीय मराठी पत्रकार परिषद के सदस्य रहे हैं और गेवराई तालुका राष्ट्रीय पत्रकार संघ के अध्यक्ष पद की जिम्मेदारी भी उन्होंने सफलतापूर्वक संभाली है।

उनके द्वारा लिखी ▶▶पान ४ पे

राज्य की राजनीति के किंगमेकर; चाचा की छाया से बाहर निकलकर बनाया अपना अलग मुकाम

विशेष लेख
जमीर काज़ी

उपमुख्यमंत्री अजित पवार के आकस्मिक दुर्घटनात्मक निधन से राज्य की राजनीति में एक बड़ी रिक्तता पैदा हो गई है। साढ़े तीन दशकों से अधिक समय तक महाराष्ट्र की राजनीति में निरंतर चर्चा में रहे अजित दादा ने अपने चाचा शरद पवार का हाथ थामकर सार्वजनिक और राजनीतिक जीवन में प्रवेश किया था। उनकी छाया में रहते हुए उन्होंने महत्वपूर्ण सत्ता पद हासिल किए, लेकिन साथ ही अपना स्वतंत्र स्थान भी निर्मित किया। महाराष्ट्र की राजनीति के एक प्रभावशाली परिवार में जन्मे अजित पवार ने पाँच बार राज्य के उपमुख्यमंत्री पद को सुशोभित किया। उनके राजनीतिक जीवन की संक्षिप्त झलक प्रस्तुत है-

चाचा शरद पवार का राजनीतिक कद राज्य और देश में तेजी से बढ़ने के साथ ही बारामती और पुणे क्षेत्र में जो रिक्तता बन रही थी, उसे भरने का कार्य अजित पवार ने किया। वर्ष १९८२ से उनका जुड़ाव चीनी कारखानों के निदेशक मंडलों से शुरू हुआ। हालांकि १९९१ का वर्ष उनके राजनीतिक जीवन में निर्णायक मोड़ साबित हुआ। पवार परिवार के 'होम ग्राउंड' बारामती से वे सीधे लोकसभा के लिए चुने गए।

लोकसभा टिकट का एक प्रसंग स्वयं अजित पवार ने एक साक्षात्कार में साझा किया था। उस समय राष्ट्रवादी कांग्रेस अस्तित्व में नहीं थी। राजीव गांधी कांग्रेस के सर्वेसर्वा थे और उम्मीदवारों की अंतिम घोषणा उन्हीं द्वारा की जाती थी। महाराष्ट्र में बारामती और कराड-इन दो सीटों के उम्मीदवार सबसे अंत में घोषित हुए- बारामती से अजित पवार और कराड से पृथ्वीराज चव्हाण। दोनों की लोकसभा में एक साथ एंट्री हुई। लगभग दो दशकों बाद यही जोड़ी महाराष्ट्र की सत्ता के केंद्र में मुख्यमंत्री-उपमुख्यमंत्री के रूप में फिर साथ आई।

अजित पवार के राजनीतिक सफर का सबसे निर्णायक क्षण तब आया जब उन्होंने सांसद पद से इस्तीफा दिया। पी. वी. नरसिंह राव द्वारा शरद पवार को केंद्र में रक्षा मंत्री बनाए जाने पर संसद सदस्यता आवश्यक थी। सुरक्षित सीट बारामती थी, जहां से कुछ माह पहले ही अजित पवार चुने गए थे। चाचा के लिए उन्होंने सांसद पद छोड़ा-यह निर्णय उनकी राजनीतिक निष्ठा का प्रतीक माना जाता है। दिल्ली में तीन-चार महीने के प्रवास के बाद उसी वर्ष वे बारामती से विधानसभा पहुंचे। तब से आज तक साढ़े तीन दशकों से बारामती उनका अभेद्य किला बना रहा। वे लगातार सात बार विधायक चुने गए।

सांसद से विधायक, मंत्री से उपमुख्यमंत्री और विपक्ष के नेता से फिर सत्ता के केंद्र तक-अजित पवार का राजनीतिक सफर निरंतरता, संघर्ष और सत्ता राजनीति के उतार-चढ़ाव का प्रतिबिंब है। १९९१ के उस पहले कदम से महाराष्ट्र की राजनीति में 'अजित पवार' नाम का एक स्वतंत्र अध्याय शुरू हुआ-यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी।

सत्ता की राजनीति में पार्टी की रीढ़ बने

राष्ट्रवादी कांग्रेस की स्थापना से लेकर पार्टी विस्तार तक की बड़ी जिम्मेदारी अजित पवार ने कुशलता से निभाई। संगठन निर्माण, चुनाव प्रबंधन और सत्ता की राजनीति में वे पार्टी की रीढ़ साबित हुए। हालांकि, शरद पवार के राजनीतिक उत्तराधिकारी के रूप में सुप्रिया सुले को मिलती प्राथमिकता और पार्टी के भीतर महसूस होने वाला द्वंद्व उनके मन में असंतोष का कारण बना।

इस असंतोष का खुला प्रदर्शन २०१९ में हुआ। विधानसभा चुनाव परिणामों के बाद राजनीतिक अस्थिरता के बीच देवेंद्र फडणवीस से हाथ मिलाकर तड़के शपथग्रहण कर उन्होंने ▶▶पान ४ पे

अजित दादा पवार के निधन से हमने अपना पारिवारिक मुखिया खो दिया-सुनील तटकरे

आज का दिन राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी और पूरे महाराष्ट्र के लिए अत्यंत दुःखद और काला दिन

मुंबई (संवाददाता):

राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री अजित दादा पवार के निधन से हमने अपने परिवार के मुखिया को खो दिया है। उनका अचानक जाना बेहद आघात पहुँचाने वाला और दिल को झकझोर देने वाला है। उनके जाने से एक कुशल प्रशासक, गंभीर, निर्भीक और सदैव महाराष्ट्र के विकास को प्राथमिकता देने वाला मजबूत नेतृत्व हमसे छिन गया है। ये बातें राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के प्रदेशाध्यक्ष एवं सांसद सुनील तटकरे ने अपने शोक संदेश में कहीं।

सुनील तटकरे ने कहा कि उन्हें कई वर्षों तक अजित दादा के साथ काम करने का अवसर मिला। जब भी मुलाकात होती, वे इस बात पर जोर देते थे कि राजनीति और प्रशासन में शिवाजी, शाहू, फुले और आंबेडकर के विचारों को आधार बनाकर ही काम किया जाना चाहिए। उनका दृढ़ विश्वास था कि सरकारी योजनाएँ राज्य के अंतिम पायदान तक पहुँचना चाहिए। किसानों के प्रति उनकी गहरी चिंता, संवेदनशीलता और प्रतिबद्धता को मैंने बहुत करीब से महसूस किया है।

उन्होंने कहा कि उनके व्यक्तिगत और सार्वजनिक जीवन में अजित दादा का मार्गदर्शन, विश्वास और निरंतर सहयोग मिलता रहा। कठिन निर्णयों के समय उनकी स्पष्ट और दृढ़ राय, प्रशासन पर पकड़ और पार्टी कार्यकर्ताओं के प्रति अपनापन हम सभी के लिए सदैव मार्गदर्शक रहा। उनकी नेतृत्व-छाया में अनेक कार्यकर्ता तैयार हुए, जो आज सार्वजनिक जीवन में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं।

सुनील तटकरे ने कहा कि आज का दिन केवल राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी ही नहीं, बल्कि पूरे महाराष्ट्र के लिए अत्यंत शोकपूर्ण और काला दिन है। अजित दादा का इस तरह अचानक चले जाना ऐसी कमी है, जो कभी पूरी नहीं हो सकती। उनके विचार, उनका कार्य और आम आदमी के लिए की गई सेवाएँ हमेशा हमारे लिए प्रेरणा बनी रहेंगी। इस दुःख की घड़ी में पार्टी पूरी तरह पवार परिवार के साथ खड़ी है। ईश्वर पवार परिवार को यह असहनीय आघात सहने की शक्ति प्रदान करे।

अजित दादा पवार के अचानक निधन पर विश्वास करना कठिन, पूरा महाराष्ट्र सदमे में: छगन भुजबल

मुंबई (संवाददाता):

राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं राज्य सरकार में खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री छगन भुजबल ने अजित दादा पवार के अचानक निधन पर गहरा शोक व्यक्त करते हुए कहा कि यह खबर न केवल उनके लिए, बल्कि पूरे महाराष्ट्र के लिए अविश्वसनीय और अत्यंत पीड़ादायक है।

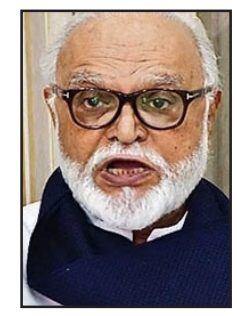

छगन भुजबल ने कहा कि अजित दादा जैसे ऊर्जावान, सदैव मुस्कुराने वाले और जीवन से भरपूर व्यक्ति के अचानक चले जाने की कल्पना किसी ने नहीं की थी। यह घटना इतनी अप्रत्याशित है कि व्यक्तिगत रूप से स्वयं को संभाल पाना भी कठिन हो रहा है।

उन्होंने बताया कि अजित दादा एक अनुशासित और सिद्धांतवादी प्रशासक थे। वित्त मंत्री सहित विभिन्न विभागों की जिम्मेदारियाँ निभाते हुए उन्होंने महाराष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने अब तक ११ बार राज्य का बजट प्रस्तुत किया, जो उन्हें सर्वाधिक बार बजट पेश करने वाले चुनिंदा वित्त मंत्रियों में शामिल करता है। उनकी प्राथमिकताएँ हमेशा प्रशासनिक अनुशासन, बुनियादी सुविधाओं का सुदृढ़ीकरण और मजबूत वित्तीय योजना रहीं।

छगन भुजबल ने कहा कि पिंपरी-चिंचवड़ को तेजी से विकसित शहरों की कतार में लाने में अजित दादा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही। बारामती, पुणे, पिंपरी-चिंचवड़ सहित पूरे महाराष्ट्र में उनके कार्यों की स्पष्ट छाप दिखाई देती है। वे समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचकर सोचने वाले जननेता थे। सुबह-सवेरे काम शुरू करने वाला यह गतिशील नेता दिन-रात महाराष्ट्र के विकास के लिए समर्पित रहा।

उन्होंने आगे कहा कि अजित दादा के साथ उनके संबंध राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी की स्थापना से भी पहले के हैं। वे निर्भीक, स्पष्टवक्ता और सिद्धांतों पर अडिग रहने वाले नेता थे। शरद पवार के नेतृत्व में बारामती की स्थानीय राजनीति से शुरुआत कर उन्होंने महाराष्ट्र की राजनीति में एक जमीनी नेता के रूप में अपनी अलग पहचान बनाई।

छगन भुजबल ने कहा कि भले ही अजित दादा की छवि एक गंभीर, सख्त और प्रशासन पर मजबूत पकड़ रखने वाले नेता की रही हो, लेकिन निजी जीवन में वे अत्यंत सरल, हंसमुख और स्नेही इंसान थे। पत्रकारों के कठिन सवालों पर भी वे हास्य का पक्ष निकाल लेते थे और यदि कहीं त्रुटि हो जाती, तो खुले दिल से माफी मांगते थे। उन्होंने पवार परिवार के दुःख में सहभागी होने की भावना व्यक्त करते हुए प्रार्थना की कि ईश्वर परिवार को यह अपूरणीय आघात सहने की शक्ति दे। उन्होंने कहा कि महाराष्ट्र अजित दादा पवार को कभी नहीं

अजित दादा पवार के निधन से हमारा मजबूत सहारा छिन गया: प्रफुल्ल पटेल

मुंबई (संवाददाता):

राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष एवं सांसद प्रफुल्ल पटेल ने अजित दादा पवार के निधन पर गहरा शोक व्यक्त करते हुए कहा कि पार्टी ने अपना एक मजबूत स्तंभ खो दिया है। यह घटना अत्यंत पीड़ादायक और आघात पहुँचाने वाली है, जिसने उन्हें व्यक्तिगत रूप से भी गहरे दुःख में डाल दिया है।

अपने शोक संदेश में प्रफुल्ल पटेल ने कहा कि वे वर्षों से अजित दादा के साथ काम करते रहे। हर मुलाकात में वे स्नेहपूर्वक हालचाल पूछते और स्वास्थ्य का ध्यान रखने की सलाह देते थे। उनके संबंध राजनीति तक सीमित

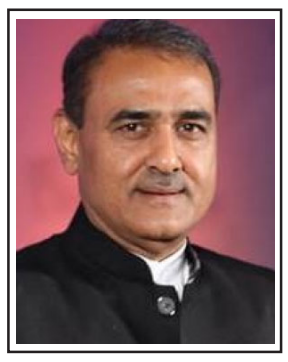

नहीं थे, बल्कि पारिवारिक बन चुके थे। उन्होंने कहा कि अजित दादा का जाना उनके लिए एक बड़ी व्यक्तिगत क्षति है, जो कभी पूरी नहीं हो सकती।

उन्होंने आगे कहा कि अजित दादा पवार के निधन से राजनीति ने एक ऐसे कुशल प्रशासक और दृढ़ निर्णय लेने वाले नेता को खो दिया है, जिनका जुड़ाव ग्रामीण महाराष्ट्र से गहराई से था। लगभग पैंतीस वर्षों के राजनीतिक सफर में उन्होंने असंख्य कार्यकर्ताओं का मार्गदर्शन किया, जनसमस्याओं के समाधान के लिए सतत सक्रिय रहे और प्रगतिशील विचारों वाले नेतृत्व को आगे बढ़ाया। हर बैठक में वे आम आदमी, किसानों, मजदूरों, युवाओं और महिलाओं की समस्याओं के समाधान पर विशेष जोर देते थे। प्रफुल्ल पटेल ने पवार परिवार के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हुए प्रार्थना की कि ईश्वर परिवार और पार्टी कार्यकर्ताओं को इस अपार दुःख को सहने की शक्ति प्रदान करे।

अजित दादा केवल मेरे नेता ही नहीं, बल्कि मेरे परिवार का सहारा थे: नवाब मलिक

मुंबई (संवाददाता):

राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं पूर्व मंत्री नवाब मलिक ने अजित दादा पवार के निधन पर गहरा शोक व्यक्त करते हुए कहा कि अजित दादा केवल उनके राजनीतिक नेता ही नहीं थे, बल्कि उनके परिवार के लिए एक मजबूत सहारा भी थे। उन्होंने कहा कि जीवन के सबसे कठिन दौर में अजित दादा ढाल बनकर उनके और उनके परिवार के साथ मजबूती से खड़े रहे, और उनकी वह मदद कभी भुलाई नहीं जा सकती।

नवाब मलिक ने कहा कि महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री अजित दादा पवार के आकस्मिक निधन की खबर ने उन्हें गहरे सदमे में डाल दिया है। उनके जाने से न केवल व्यक्तिगत, बल्कि पूरे महाराष्ट्र को ऐसी क्षति पहुँची है जिसकी भरपाई कभी संभव नहीं होगी। उन्होंने कहा कि अजित दादा कर्तव्यनिष्ठ, दृढ़ निश्चयी और अपने वचनों पर अडिग रहने वाले जननेता थे। उनकी नेतृत्व क्षमता, मार्गदर्शन और व्यक्तित्व ने राजनीतिक जीवन में हमेशा हौसला और दिशा दी। उन्होंने श्रद्धा और सम्मान के साथ अजित दादा पवार को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि उनका निधन महाराष्ट्र की राजनीति में एक अपूरणीय रिक्तता छोड़ गया है।

UGC नियम २०२६ पर देशभर में घमासान, संतों से लेकर छात्रों तक सड़क पर उतरे-स्वर्ण समाज का तीखा विरोध

नई दिल्ली। तामीर न्युज

उच्च शिक्षा से जुड़े UGC नियम २०२६ (जिसे आमतौर पर णऋछ बिल २०२६ कहा जा रहा है) को लेकर देशभर में विरोध तेज होता जा रहा है। छात्र संगठनों, शिक्षकों, सामाजिक संगठनों और स्वर्ण समाज के प्रतिनिधियों के बाद अब साधु-संत भी इस मुद्दे पर खुलकर सामने आ गए हैं। अयोध्या के जगद्गुरु परमहंस आचार्य द्वारा प्रधानमंत्री को पत्र लिखकर नियम वापस लेने या इच्छामृत्यु की अनुमति मांगने के बाद यह विवाद और गहरा गया है।

UGC द्वारा जारी किए गए ये नए नियम उच्च शिक्षा संस्थानों में समानता और भेदभाव-रोधी व्यवस्था लागू करने के उद्देश्य से लाए गए हैं। आयोग का कहना है कि इसका मकसद विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में जाति, वर्ग, धर्म, लिंग या किसी अन्य आधार पर होने वाले भेदभाव को रोकना है। इसके तहत हर संस्थान में इक्विटी कमेटी, समान अवसर केंद्र और शिकायत निवारण तंत्र बनाना अनिवार्य किया गया है।

हालांकि, स्वर्ण समाज और उससे जुड़े कई संगठन इन नियमों का कड़ा विरोध कर रहे हैं। उनका आरोप है कि यह नियम व्यावहारिक रूप से एकतरफा हैं और सामान्य वर्ग के छात्रों व शिक्षकों को संदेह के दायरे में खड़ा करते हैं। प्रदर्शनकारियों का कहना है कि किसी भी शिकायत पर बिना ठोस जांच के कार्रवाई का प्रावधान संस्थानों में भय और असंतोष का माहौल पैदा कर सकता है।

स्वर्ण समाज के विरोध के मुख्य कारण

स्वर्ण समाज का कहना है कि नए नियमों में भेदभाव की परिभाषा बहुत व्यापक रखी गई है, जिससे सामान्य शैक्षणिक निर्णय भी शिकायत का कारण बन सकते हैं।

उनका आरोप है कि इससे योग्य छात्रों और शिक्षकों पर अनावश्यक दबाव पड़ेगा।

विरोधियों का कहना है कि संस्थानों की स्वायत्तता कमजोर होगी और प्रशासनिक हस्तक्षेप बढ़ेगा।

कुछ संगठनों का यह भी तर्क है कि नियमों का दुरुपयोग कर व्यक्तिगत रंजिशें निकाली जा सकती हैं।

बिल/नियम की प्रमुख सिफारिशें

हर उच्च शिक्षण संस्थान में इक्विटी कमेटी का गठन।

समान अवसर केंद्र को अनिवार्य बनाना।

भेदभाव की शिकायतों के लिए समयबद्ध जांच और कार्रवाई।

णऋछ को निगरानी और दंडात्मक अधिकार।

नियमों के उल्लंघन पर फंड रोकने या अन्य कार्रवाई की व्यवस्था।

संभावित फायदे

शैक्षणिक परिसरों में भेदभाव पर रोक।

कमजोर और वंचित वर्ग के छात्रों को सुरक्षा।

शिकायतों के लिए स्पष्ट और औपचारिक मंच।

समान अवसर और समावेशी शिक्षा का वातावरण।

संस्थानों में जवाबदेही बढ़ना।

संभावित नुकसान

झूठी या दुर्भावनापूर्ण शिकायतों की आशंका।

शिक्षकों और प्रशासन में भय का माहौल।

शैक्षणिक निर्णयों पर कानूनी विवाद बढ़ने की संभावना।

संस्थानों की स्वायत्तता पर असर।

शिक्षा की गुणवत्ता पर अप्रत्यक्ष दबाव।

फिलहाल केंद्र सरकार और शिक्षा मंत्रालय का कहना है कि नियमों को लेकर फैलाई जा रही आशंकाएं निराधार हैं और किसी भी तरह के दुरुपयोग को रोका जाएगा। लेकिन जिस तरह से देश के कई हिस्सों में प्रदर्शन हो रहे हैं, उससे साफ है कि UGC नियम २०२६ आने वाले समय में शिक्षा और राजनीति - दोनों में एक बड़ा मुद्दा बने ने जा रहे हैं

पान १ से

दादा की असमय...

पूरे महाराष्ट्र के सार्वजनिक जीवन की बड़ी क्षति है।

- एड. आकाश फुंडकर (श्रम मंत्री)

अध्ययनशील और कर्तबगार नेता का नुकसान

दादाओं के असमय जाने से महाराष्ट्र ने एक अनुभवी, अजातशत्रु और लोकाभिमुख नेता खो दिया है।

- जयकुमार रावल (पणन मंत्री)

सभी समाजों को साथ लेकर चलने वाला नेतृत्व खोया

वे समय और अनुशासन को महत्व देने वाले तथा अल्पसंख्यकों के विकास के लिए प्रतिबद्ध नेता थे।

- हाजी जतकर (संस्थापक अध्यक्ष, महाराष्ट्र राज्य अल्पसंख्यांक अधिकारी एवं कर्मचारी महासंघ)

स्पष्ट राजनीति की बुलंद आवाज खामोश

यह केवल एक व्यक्ति का नहीं, बल्कि निर्भीक वक्तृत्व और सेक्युलर विचारधारा के एक प्रभावशाली अध्याय का अंत है।

- जयदीप कवाडे (उपाध्यक्ष, महाराष्ट्र लघु उद्योग विकास महामंडल)

'यह केवल एक दुर्घटना है...

कोलकाता से उठाई गई-ऐसा मुझे पता चला। स्पष्ट करना चाहता हूं कि इसमें कोई राजनीति नहीं है, यह केवल एक दुर्घटना है। इस मृत्यु का दर्द महाराष्ट्र को, हम सभी को है। कृपया इसमें राजनीति न लाएं-बस इतना ही कहना

राज्य की राजनीति के किंगमेकर...

बगावत का प्रयास किया, लेकिन यह अधिक समय तक नहीं चला। इसके बाद शिवसेना, राष्ट्रवादी कांग्रेस और कांग्रेस ने मिलकर महाविकास आघाड़ी बनाई। उस समय अजित पवार ने सत्ता में बने रहने का निर्णय लिया। फिर भी पार्टी में 'अजित पवार गुट' और 'शरद पवार गुट' की विभाजन रेखा स्पष्ट होने लगी।

यह विभाजन २०२३ में अजित पवार की बगावत के बाद वास्तविकता बन गया। उन्होंने न केवल अलग राह चुनी, बल्कि राष्ट्रवादी कांग्रेस के अध्यक्ष पद पर भी दावा किया। पार्टी का नाम और चुनाव चिह्न अपने पास रखने की इच्छा जताते हुए शरद पवार के नेतृत्व वाली राष्ट्रवादी से अलग अध्याय के संकेत दिए। अंततः २ जुलाई २०२३ को अजित पवार ने महायुति के साथ हाथ मिलाया और मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे की मंत्रिमंडल में देवेंद्र फडणवीस के साथ उपमुख्यमंत्री पद की शपथ ली। यह राष्ट्रवादी कांग्रेस के भीतर लंबे समय से चले आ रहे आंतरिक संघर्ष का निर्णायक चरण था।

हालांकि पिछले दो-ढाई महीनों में, विशेषकर महानगरपालिका चुनावों की घोषणा के बाद, चाचा-भतीजे के बीच राजनीतिक टकराव कम हुआ और वे साथ आते दिखे। जिला परिषद और पंचायत समिति चुनाव दोनों पक्षों द्वारा साथ लड़ने के चलते निकट भविष्य में विलय की चर्चाएं भी जोर पकड़ रही थीं। ऐसे समय में अजित दादा का अकाल निधन राज्य की राजनीति में एक बड़ी रिक्तता छोड़ गया।

अजित पवार : राजनीतिक सफर (संक्षेप में)

कार्यकाल

१९९१-२०२६: लगातार ३२+ वर्ष सक्रिय राजनीति

१९९१-वर्तमान: बारामती से ७ बार विधायक

संसद से विधानसभा

जून १९९१ - सितंबर १९९१: सांसद

१९९१ - १९९५: पहली बार विधायक

१९९५ - २०२६: लगातार विधायक

मंत्री पदों का क्रम

१९९१ - १९९२: कृषि-फलोत्पादन, ऊर्जा राज्य मंत्री

१९९२ - १९९५: जल संरक्षण, ऊर्जा राज्य मंत्री

१९९९ - २००४: सिंचाई, फलोत्पादन मंत्री

२००४ - २००९: जल संसाधन, सिंचाई मंत्री

२००९ - २०१०: जल संसाधन, ऊर्जा मंत्री

उपमुख्यमंत्री के रूप में

२०१० - २०१२: उपमुख्यमंत्री (वित्त, नियोजन, ऊर्जा)

२०१२ - २०१४: उपमुख्यमंत्री (वित्त, नियोजन, ऊर्जा)

२०१९: उपमुख्यमंत्री (८० घंटे)

२०१९ - २०२२: उपमुख्यमंत्री (वित्त, नियोजन)

२०२३ - २०२६: उपमुख्यमंत्री, वित्त मंत्री

अन्य भूमिका

२०२२ - जुलाई २०२३: विपक्ष के नेता

बीड में हज २०२६ के...

शकील अहमद कासमी और मुफ्ती मोहम्मद आरिफ साहब की देखरेख में संपन्न होंगे। प्रशिक्षण में हज के रीति-रिवाज, आवश्यक नियम तथा व्यावहारिक मार्गदर्शन प्रदान किया जाएगा।

सह-आयोजकों ने बताया कि दोपहर के भोजन की व्यवस्था रहेगी तथा महिलाओं के लिए उचित पर्दे की व्यवस्था भी की गई है। आज़मीन-ए-हज से अनुरोध है कि वे समय पर उपस्थित रहें और बच्चों या गैर-संबंधित व्यक्तियों को साथ न लाएं।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:

जे. के. जामिल भाई: ९९७०५३२१६८

इरफान भाई: ७०२०५९२३२८

शफी भाई: ९४२२७४४९७४

शकील भाई: ९८२२३६०२०७

गेवराई के वरिष्ठ पत्रकार काज़ी...

गई विशेष रिपोर्ट गेवराई का साइकिल रिक्शावाला अमीरों की नाक में दम कर प्यासों की प्यास बुझा रहा है को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ था। इससे पहले भी उन्हें दर्पण पुरस्कार सहित कई अन्य सम्मान मिल चुके हैं।

काज़ी अमान, गेवराई तालुका के पहले और सबसे वरिष्ठ दिवंगत पत्रकार काज़ी हयातुल्ला के ज्येष्ठ पुत्र हैं और वे अपने पिता की पत्रकारिता की विरासत को सफलतापूर्वक आगे बढ़ा रहे हैं। 'मूकनायक पुरस्कार' की घोषणा के बाद उनका सर्वत्र अभिनंदन हो रहा है।

दैनिक भारत की तामीर अखबार के मालिक, मुद्रक, प्रकाशक, संपादक काजी मखदूम शफीउद्दीन ने आरएम प्रिंटरर्स, बार्शी रोड, बीड 431122 महाराष्ट्र में मुद्रित कर के दैनिक तामीर, नगर परिषद परिसर, बशीर गंज, बीड, महाराष्ट्र कार्यालय से प्रकाशित किया है। मोबाइल : 9270574444 ईमेल : hinditameer@gmail.com वेबसाइट : www.dailytameer.com

daily Bharat ki tameer newspaper owner printer publisher editor Quazi makhdoom shafiuddin has printed at RM printers barshi road beed 431122 Maharashtra at published at office daily tameer nagar parishad complex Bashir gunj beed Maharashtra. Mobile : 9270574444 Email : hinditameer@gmail.com Website : www.dailytameer.com